इकाई-तीन

10 जहाँगीर (Jahangir)

विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1—जहाँगीर के राज्यारोहण, बारह आज्ञाएँ तथा उसके शासनकाल में हुए विभिन्न विद्रोहों की विवेचना कीजिए।

Discuss the accession, twelve ordinance and revolts of Jahangir Reign.

अथवा सलीम अथवा जहाँगीर सिंहासन पर किस प्रकार बैठा? उसके शासन काल की प्रमुख घटनाओं को उल्लेख कीजिए।

How did Salim or Jahangir sit on the throne? Describe the main incidents during his reign.

अथवा खुसरो तथा महाबत खाँ पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

Write short notes on Khusuroe and Mahabat Khan.

उत्तर—

जहाँगीर का परिचय
(Introduction of Jahangir)

अकबर ने आमेर की राजकुमारी जोधाबाई से विवाह किया था और मुस्लिम रिवाजों के आधार पर उसका नाम मरियम उज्जमानी रखा था। बहुत समय तक अकबर नि:सन्तान रहा। अन्त में **ख्वाजा मुईनुद्दीन सलीम चिश्ती** नामक सूफी सन्त के आशीर्वाद से मरियम उज्जमानी के गर्भ से 30 अगस्त, 1569 ई० को एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम सन्त की यादगार में **सलीम** ही रखा गया। अकबर के दो अन्य पुत्र **मुराद** और **दानियाल** थे, जिनकी मृत्यु बहुत पहले हो गई थी।

शिक्षा तथा परिवार—सलीम की शिक्षा का भार **अब्दुर्रहीम खानखाना** पर छोड़ा गया। उसकी देख-देख में सलीम ने अरबी, फारसी, हिन्दी, इतिहास, भूगोल, गणित आदि का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। अकबर ने सलीम का विवाह आमेर-नरेश **भगवानदास** की पुत्री **मानबाई** के साथ किया था।[1] इसको जहाँगीर ने **शाहबेगम** की उपाधि प्रदान की थी। सलीम ने कई अन्य विवाह भी किए थे। जहाँगीर की सन्तानें इस प्रकार थीं—

(1) खुसरो—मानबाई के गर्भ से 6 अगस्त, 1587 ई० को खुसरो का जन्म हुआ था। अपने पुत्र के पितृ-भक्ति-हीन व्यवहार से उत्पन्न आन्तरिक अवसाद के कारण खुसरो की माता **मानबाई** ने आत्महत्या कर ली थी।

---

1. मुगलकालीन भारत, आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव, पृष्ठ 262.

(2) परवेज— 2 अक्टूबर, 1589 ई० को सलीम की एक रानी साहिबेजमाल के गर्भ से परवेज का जन्म हुआ था।

(3) खुर्रम (शाहजहाँ)—5 जनवरी, 1592 ई० को जगत गोसाईं के गर्भ से खुर्रम का जन्म हुआ था।

(4) शहरयार— 1605 ई० में सलीम की रखैल स्त्री से शहरयार का जन्म हुआ था।

जहाँगीर का विद्रोह
(Revolt of Jahangir)

सलीम का अकबर के विरुद्ध विद्रोह का कारण—सम्राट अकबर सलीम के पुत्र खुसरो को अधिक प्यार करता था। खुसरो अकबर के मुख्य एवं कृपापात्र दरबारी अजीज कोका का दामाद और मानसिंह का भानजा था। ये दोनों ही खुसरो को गद्दी दिलाने के पक्ष में थे। इन दोनों ने सलीम के विरुद्ध षड्यन्त्र किया और उस पर यह आरोप लगाया कि उसने सम्राट अकबर को विष देकर मारने की योजना बनाई है। इन कुचक्रों के कारण सलीम और सम्राट में विरोध बढ़ गया।

प्रो० एस० आर० शर्मा ने लिखा है—"प्रचलित राजनीतिक कुचक्रों तथा छल-कपट ने धीरे-धीरे उनके सम्बन्ध कड़ुवे कर दिए और दिल फट गए।" इधर अकबर भी सलीम के पुत्र खुसरो से प्रभावित था। सलीम की विद्रोही प्रवृत्ति से दु:खी होकर अकबर ने खुसरो को अपना उत्तराधिकारी बनाने का निश्चय किया। अकबर ने इस दृष्टिकोण से सलीम उत्तराधिकार के लिए शंकित रहने लगा।

विद्रोह की संक्षिप्त घटनाएँ—अकबर दक्षिण-विजय करने के लिए गया, तो उसने सलीम को उत्तरी भारत का भार सौंप दिया। सलीम ने अकबर की अनुपस्थिति में विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। दक्षिण से लौटते ही अकबर ने सलीम को आदेश भिजवाया—"यदि वह बिना सेना के अकेला आकर दरबार में अभिवादन करे, तो उसको क्षमा कर दिया जाएगा। यदि उसका मन पक्का न हो तो वह इलाहाबाद लौट जाए और अपना मन पक्का करे।" सम्राट का सन्देश पाकर सलीम इलाहाबाद चला गया। अकबर ने बिहार व बंगाल के प्रान्त सलीम को सौंप दिए, किन्तु फिर भी सलीम ने सम्राट अकबर (अपने पिता) के विरुद्ध विद्रोह किया। सम्राट अकबर ने दक्षिण से अपने मित्र अबुल फजल को बुलाया, किन्तु राजधानी पहुँचने से पूर्व ही सलीम ने अबुल फजल का ओरछा के बुन्देला सरदार **वीरसिंह बुन्देला** से वध करा दिया। सलीम के इस कार्य से अकबर को बड़ा दु:ख हुआ।

विद्रोह का अन्त—जिस समय सलीम विद्रोह के पथ पर था, उस समय अकबर अपने पारिवारिक संकटों में फँसा हुआ था, क्योंकि उसकी माता बीमार थी। 1603 ई० में सलीम में परिवार के प्रति प्रेम उमड़ आया। वह दुःखी मन से रनिवास पहुँचा। वहाँ राजमाता ने पिता व पुत्र में समझौता करा दिया। **इनायत उल्ला** ने लिखा है—"सलीमा बेगम की मध्यस्थता के कारण सम्राट तथा राजकुमार में मेल हो गया। सम्राट ने पुत्र के प्रति अपने स्वाभाविक स्नेह के सामने हार मान ली, उधर अकबर की सम्माननीय माता ने भी उसको क्षमा कर दिया।" सलीम को अकबर ने मेवाड़ पर विजय के लिए भेजा। लेकिन सलीम राग-रंग में डूबा रहा। बाद में 1604 ई० सलीम अपनी दादी के मरने के अवसर पर आगरा आया । अकबर ने पुन: सलीम को क्षमा कर दिया क्योंकि इसी बीच उसके पुत्र **दानियाल** की भी मृत्यु हो गई थी और सलीम के अतिरिक्त उसका कोई पुत्र जीवित नहीं बचा था।

सलीम द्वारा सिंहासन की प्राप्ति—अकबर के अन्तिम दिनों में भी सलीम का विद्रोह हुआ। इससे अकबर का स्वास्थ्य गिर गया। दूसरी ओर अजीज कोका तथा मानसिंह का सलीम के विरुद्ध षड्यन्त्र जारी रहा और उन्होंने सलीम को बन्दी बनाने की योजना बनाई, किन्तु कुछ राजभक्त अमीरों ने इस षड्यन्त्र के विरोध में कहा, "यह चुगताई तुर्कों के नियमों और परम्पराओं के विरुद्ध है और यह कभी नहीं हो सकेगा।" इन विरोध के कारण यह षड्यन्त्र सफल न हो सका। अन्ततः मानसिंह ने खुसरो को एक नाव में बैठाकर बंगाल की ओर रवाना कर दिया। सलीम, अकबर के अन्तिम दर्शनों के लिए गया और उसने अकबर का विधिवत अभिवादन किया। अकबर ने पास रखे ताज तथा कपड़ों की ओर संकेत करके सलीम को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया और अकबर ने प्राण त्याग दिए। इस प्रकार 25 अक्टूबर 1605 ई० को सलीम '**नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी**' के नाम से सम्राट बन गया।

इस अवसर पर नवीन सम्राट ने अनेक बन्दियों के रिहा करने के आदेश दिए, नए नामों से सिक्के ढाले गए। सम्राट ने उन सब अधिकारियों को क्षमा कर दिया जिन्होंने उसके उत्तराधिकार का विरोध किया था। सामान्यतः सभी अधिकारियों को उनके पदों पर यथावत् रखा गया। कृतज्ञतावश उसने उन लोगों को भी उच्च पद प्रदान किया जिन्होंने संकट के समय उसका साथ दिया था। इसमें शेख सलीम चिश्ती का पौत्र और वीरसिंह बुन्देला था। मिर्जा ग्यासबेग को एतमादुद्दौला तथा जमान खाँ को महाबत खाँ की उपाधि प्रदान की गयी।

अध्यादेश जारी करना—राज्याभिषेक के बाद जहाँगीर का पहला कार्य प्रजा के कल्याण तथा सुख के लिए अध्यादेश जारी करना था। '**वाक्यात-ए-जहाँगीरी**' में इन अध्यादेशों का उल्लेख किया गया है। ये अध्यादेश '**दस्तूर-उल-अमल**' के नाम से प्रसिद्ध थे—

(1) तमगा तथा मीरबहरी (स्थल तथा नदीमार्गों पर चुंगी) न वसूली जाएँ और वे कर भी न वसूले जाएँ जिन्हें सूबा या जागीर के जागीरदार अपने लाभ के लिए वसूलते थे।

(2) मार्गों पर जहाँ सुरक्षा नहीं थी और आबादी से दूर थे, एक सराय, एक मस्जिद और एक कुएँ का निर्माण कराया जाए और वहाँ लोगों को बसने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

(3) कोई व्यक्ति मार्ग में व्यापारियों का माल उनकी अनुमति के बिना नहीं खोल सकता था। उत्तराधिकारियों को बिना हस्तक्षेप के सम्पत्ति पर अधिकार करने दिया जाए। अगर कोई उत्तराधिकारी नहीं था तो उस सम्पत्ति को सरकार के पास जमा किया जाए और उसे सार्वजनिक निर्माण कार्यों में व्यय किया जाए।

(4) शराब तथा हर प्रकार के मादक द्रव्य का निषेध किया जाए।

(5) कोई भी व्यक्ति दूसरे के मकान में नहीं बस सकता था। अपराधियों के नाक, कान न काटे जाएँ।

(6) खालसा भूमि के अधिकारियों तथा जागीरदारों को आदेश दिया गया कि वे किसी भी रैयत की भूमि को नहीं खरीद सकते, न उसकी भूमि पर खेती कर सकते और न जिले की जनता से विवाह सम्बन्ध स्थापित कर सकते थे।

(7) बड़े नगरों में औषधालय बनवाए जाएँ ओर रोगियों का व्यय शाही कोष से दिया जाए।

(8) कुछ विशेष दिनों में पशु-वध किया जाए। स्थायी रूप से सप्ताह में दो दिन बृस्पतिवार और रविवार को पशुवध का निषेध किया गया (ये क्रमशः जहाँगीर और अकबर के जन्म-दिन थे)।

(9) रविवार को पवित्र दिन माना जाए (जैसा अकबर के समय में था) और उस दिन पशु-पक्षियों का वध न किया जाए।

(10) सभी मनसबदारों की जागीरें स्थायी कर दी जाएँ और प्रत्येक मनसबदार को उसकी योग्यता के अनुसार वेतन वृद्धि दी जाए।

(11) आइमा तथा मदद-ए-मआश भूमियों को जो पूजा तथा प्रार्थना के लिए दी गई थी, उन्हें भी स्थायी कर दिया गया। सद्र-ए-जहाँ को आदेश दिया गया कि वह निर्धनों की देखभाल करें।

(12) किलों तथा कारागारों में जो बन्दी दीर्घकाल से बन्द थे उन्हें मुक्त कर दिया गया।

जहाँगीर के शासन काल की मुख्य घटनाएँ
(Main Events of the Reign of Jahangir)

सम्राट जहाँगीर के शासन काल की प्रमुख घटनाओं को निम्न रूप में स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) विरोधियों का अन्त—अजीज कोका तथा मानसिंह दोनों ने ही सलीम का विरोध किया था। अत: आगरा के किले में 3 नवम्बर, 1605 ई० को सिंहासन पर आरूढ़ होते ही सलीम ने **नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर** की उपाधि धारण की और **मानसिंह** तथा उसके सहायक **अजीज कोका** के विरोध का अन्त कर दिया।

(2) सहायकों का सम्मान—सलीम ने **वीरसिंह बुन्देला** नामक व्यक्ति से अबुल फजल का वध कराया था। अतएव सिंहासन पर बैठते ही सम्राट ने वीरसिंह बुन्देला को तीन हजार मनसब का पद देकर सम्मानित किया। उसने अपने गुरु **अब्दुर्रहीम खानखाना** तथा नूरजहाँ के पिता **मिर्जा ग्यासबेग** को भी उच्च पदों पर आसीन किया।

(3) लोकप्रियता प्राप्ति के उपाय—सम्राट जहाँगीर अत्यन्त ही कूटनीतिज्ञ था। उसने अपनी लोकप्रियता के लिए जनहित और कल्याण के निम्नलिखित कार्य किए थे—

(i) अनेक अमीरों तथा शक्तिशाली मन्त्रियों को नए-नए पद प्रदान किए।

(ii) राजमहल के बाहर एक न्याय की घण्टी सोने की जंजीर में लटकवा दी, जिसको बजाकर प्रत्येक व्यक्ति अपनी फरियाद सम्राट को पहुँचा सकता था।

(iii) हिन्दुओं पर लगे अतिरिक्त करों को हटा दिया।

(iv) समुद्र तथा खानों पर लगने वाले करों को समाप्त कर दिया।

(v) उसने अपनी प्रजा को सभी धर्मों का समान रूप से पालन करने की स्वतन्त्रता दे दी।

(vi) उसने बारह अध्यादेश जारी करके जनता के हित में अनेक सुधार किए।

(4) खुसरो का विद्रोह—खुसरो जहाँगीर की रानी व राजा भगवानदास की पुत्री मानबाई का पुत्र था। वह अजीज कोका का दामाद तथा मानसिंह का भानजा था। अकबर की मृत्यु पर वह अकबर की कब्र खोदने का बहाना करके महल से निकल गया था। वह पंजाब पहुँचा और सिक्खों के **गुरु अर्जुनसिंह** से मिलकर उसने जहाँगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। लेकिन बाद में शाही सेना द्वारा खुसरो को बन्दी बना लिया गया।

(5) गुरु अर्जुनसिंह का वध—खुसरो का साथ देने के अपराध में सिक्खों के गुरु अर्जुनसिंह को भी बंदी बना लिया गया और उनको फाँसी पर लटका दिया गया। जहाँगीर के इस कार्य ने सिक्खों तथा मुगलों के बीच वैमनस्य के बीज बो दिए, जो भविष्य में विनाशकारी सिद्ध हुए।

(6) खुसरो का दण्ड—विद्रोह करने के अपराध में जहाँगीर ने खुसरो को अन्धा करने का दण्ड दिया था। कहा जाता है कि जब खुसरो की आँख में तीर चुभाए गए तो उसको असह्य

वेदना हुई। अन्धा खुसरो जब पिता के सामने लाया गया तो जहाँगीर का वात्सल्य प्रेम उमड़ पड़ा। उसने खुसरो की आँख ठीक कराने के आदेश दिए, किन्तु प्रयास करने पर भी उसकी केवल एक ही आँख ठीक हो सकी। कालान्तर में **नूरजहाँ** और शहजादा खुर्रम उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचते रहे। अन्त में 1622 ई० में खुसरो को खुर्रम को सौंप दिया गया और शीघ्र ही खुसरो दुर्ग में कैदी अवस्था में मार दिया गया।

(7) विजय यात्राएँ—(i) मेवाड़ विजय—राणा प्रताप के मरने के बाद उनका पुत्र अमरसिंह गद्दी पर बैठा था। अकबर के समय में सम्पूर्ण मेवाड़ पर विजय प्राप्त न हो सकी थी। जहाँगीर ने **परवेज** को भेजा परन्तु वह सफल न हो सका फिर **महाबत खाँ** को एक विशाल सेना के साथ भेजा गया। राणा अमरसिंह पराजित हुआ परन्तु उसे पूर्ण सफलता नहीं मिली अतएव जहाँगीर ने खुर्रम को मेवाड़ विजय का कार्य सौंपा। शहजादा खुर्रम के सामने राणा अमरसिंह ने घुटने टेक दिए। राणा अमरसिंह का मुगल दरबार में भारी स्वागत हुआ और उन्हें पाँचहजारी मनसब का पद दे दिया गया। राणा अमरसिंह ने सिंहासन छोड़ दिया और उसका पुत्र कर्णसिंह सिंहासन पर बैठ गया। औरंगजेब के शासन काल तक मेवाड़ तथा मगुलों की मित्रता स्थायी रही। मेवाड़ के विरुद्ध सफलता जहाँगीर की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी।

(ii) अहमदनगर विजय—जिस समय अकबर दक्षिण-विजय के लिए गया हुआ था, उत्तर में सलीम ने विद्रोह कर दिया था, जिसके कारण अकबर को अपनी दक्षिण-विजय अधूरी छोड़कर ही लौटना पड़ा था। उसके दक्षिण से पीठ फेरते ही **मलिक अम्बर** नामक वीर सैनिक ने अहमदनगर में अपनी स्वतन्त्र सत्ता जमा ली थी। उस समय बुरहानपुर की मुगल छावनी में शहजादा **परवेज** तथा **अब्दुर्रहीम खानखाना** भी ठहरे हुए थे, किन्तु वे मलिक अम्बर के विरुद्ध सफल न हो सके। अन्त में शहजादा खुर्रम को वहाँ पर दो बार भेजा गया। दोनों ही बार उसको भारी सफलता मिली। 1671 ई० में मलिक अम्बर और खुर्रम में सन्धि हो गई लेकिन मलिक अम्बर अधिक दिन तक सन्धि को नहीं बनाए रख सका। अन्त में, 1626 ई० में मलिक अम्बर की मृत्यु हो जाने पर अहमदनगर पर मुगलों का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

(iii) काँगड़ा विजय—काँगड़ा पंजाब में स्थित राजपूतों के अधिकार में था। इतिहासकारों ने लिखा है कि काँगड़ा का किला इतना मजबूत था कि ग्यासुद्दीन तुगलक से लेकर अकबर तक जितने भी शासक हुए, उन्होंने समय-समय पर इस किले का घेरा डाला, परन्तु सफलता किसी को भी नहीं मिली। लाहौर के सूबेदार **मुर्तजा खाँ** को काँगड़ा विजय के लिए भेजा गया था, किन्तु वह सफल न हुआ। अन्त में खुर्रम ने काँगड़ा पर मुगल पताका फहरा दी। यह विजय 1620 ई० में प्राप्त हुई थी।

(iv) कन्धार की क्षति—अकबर के शासन काल में कन्धार पर मुगलों का अधिकार हो गया था। सम्राट जहाँगीर के शासन काल में फारस के बादशाह **शाह अब्बास** ने कुछ ईरानियों को भड़काया, परन्तु जहाँगीर ने उनको मार भगाया। शाह अब्बास एक कुशल कूटनीतिज्ञ था। उसने बहुमूल्य उपहार भेजकर जहाँगीर से अपने सम्बन्ध घनिष्ठ बना लिए। उससे जहाँगीर कन्धार से बेफिक्र हो गया, किन्तु अवसर पाते ही शाह अब्बास ने कन्धार पर अधिकार कर लिया और कन्धार मुगलों के हाथ से निकल गया। कन्धार विजय पर **शाह अब्बास** ने जहाँगीर को लिखा—"वास्तव में कन्धार का अधिकारी वही (शाह) था। अतएव सम्राट को कन्धार के जाने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।" कन्धार का मुगलों के हाथ से निकल जाना जहाँगीर के लिए एक गहरा आघात था।

(8) नूरजहाँ से विवाह—नूरजहाँ का मूल नाम **मेहरुन्निसा** था। वह तेहरान के निवासी मिर्जा **ग्यासबेग** की पुत्री थी। मिर्जा ग्यासबेग मेहरुन्निसा को लेकर सम्राट अकबर के दरबार में आया था। मेहरुन्निसा का भाई **आसफ खाँ** भी मुगल दरबार का प्रभावशाली व्यक्ति बन गया था। मेहरुन्निसा का विवाह बंगाल के सूबेदार **शेर अफगन** से हुआ था। शेर अफगन का प्रारम्भिक नाम **अलीकुली बेग** था। एक शेर को मारने के उपलक्ष्य में जहाँगीर ने इसे शेर अफगन की उपाधि दी थी। एक पारस्परिक संघर्ष में शेर अफगन ने मुगलों के विरुद्ध विद्रोह किया था और युद्ध में मारा गया था। उसकी विधवा पत्नी मेहरुन्निसा मुगल दरबार की सेवा में रत अपने पिता मिर्जा ग्यासबेग तथा भाई आसफ खाँ के पास आ गई थी। मेहरुन्निसा को अकबर की विधवा **सलीमा बेगम** की सेवा में नियुक्त कर दिया गया था। कुछ विद्वानों का कहना है कि मेहरुन्निसा को जहाँगीर पहले से ही चाहता था। अतएव 1611 ई० में जहाँगीर ने मेहरुन्निसा से विधिवत विवाह कर लिया और उसको **नूरजहाँ** की उपाधि से विभूषित किया। जहाँगीर के शासन काल की एक प्रमुख घटना उसका नूरजहाँ से विवाह है। नूरजहाँ के पास अपने पहले पति शेर अफगन से एक लड़की भी थी, जिसका नाम **लाड़ली बेगम** था।

(9) दरबार की गुटबन्दी—जहाँगीर के शासन काल को नूरजहाँ के विवाह के बाद से दरबार की गुटबन्दी का काल माना गया है। यह नूरजहाँ के प्रभुत्व का काल था जिसको दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(i) प्रथम काल (1611 से 1622 ई० तक)—इस काल में नूरजहाँ ने अपने पिता ग्यासबेग अर्थात् एतमादुद्दौला, अपने भाई आसफ खाँ तथा शहजादा खुर्रम से मिलकर अपना गुट बनाया था। इस काल में नूरजहाँ खुर्रम को प्यार करती रही और उसी को सम्राट बनाने के स्वप्न देखा करती थी। खुर्रम आसफ खाँ का दामाद भी था। यह काल उपलब्धियों और साम्राज्य की प्रगति का काल था।

(ii) द्वितीय काल (1622 ई० से 1627 ई० तक)—नूरजहाँ की लड़की लाड़ली बेगम का विवाह राजकुमार शहरयार से हो गया। अब नूरजहाँ और शहरयार का एक गुट बन गया और खुर्रम तथा उसके ससुर आसफ खाँ का पृथक गुट बना गया था।

(10) खुर्रम का विद्रोह—जहाँगीर के चार पुत्रों में दूसरे पुत्र का नाम खुर्रम था और नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ की लड़की **मुमताज महल** का विवाह खुर्रम से हुआ था। इधर नूरजहाँ की लड़की लाड़ली बेगम का विवाह शहजादा शहरयार से हुआ था। नूरजहाँ शहरयार को राज्य का उत्तराधिकारी बनाने का स्वप्न देखने लगी। जहाँगीर पर नूरजहाँ का पूरा-पूरा प्रभाव भी था। इधर आसफ खाँ खुर्रम का पक्ष ले रहा था। इसी समय नूरजहाँ ने खुर्रम से छुटकारा पाने के लिए एक चाल चली। उसने जहाँगीर से कहला दिया कि खुर्रम कन्धार-विजय के लिए जाए। किन्तु खुर्रम ने इस आदेश का पालन नहीं किया और दक्षिण में जाकर उसने विद्रोह किया। सेनापति **महाबत खाँ** ने उसको परास्त कर दिया। पराजित होकर उसने **मलिक अम्बर** की सहायता ली। **अब्दुर्रहीम खानखाना** भी खुर्रम के साथ मिल गया, इसकी सूचना पाकर **जहाँगीर** ने कहा—"उसके पिता बैरम खाँ ने मेरे आदरणीय पिता के साथ विश्वासघात किया था। अतएव अब्दुर्रहीम स्वभाव से ही गद्दार था। उसने अपने पिता का ही अनुसरण किया और बुढ़ापे में अपने धवल यश पर कलंक का टीका लगा लिया।" जहाँगीर ने अब्दुर्रहीम खानखाना के चरित्र पर सन्देह व्यक्त करते हुए यहाँ तक कह दिया था—"भेड़िये का बच्चा भेड़िया ही होगा चाहे उसका पालन-पोषण मनुष्यों के द्वारा ही क्यों न किया जाए।" जहाँगीर ने खुर्रम का दमन किया। वह बंगाल की ओर चला गया, किन्तु शाही सेना उसके पीछे लगी रही।

उसी समय खुर्रम ने आत्मसमर्पण कर दिया। जहाँगीर ने उसको क्षमा कर दिया। खुर्रम ने अपने पुत्र मुराद को राजधानी भेज दिया। उसने रोहतासगढ़ का किला भी सम्राट द्वारा नियुक्त व्यक्ति को सौंप दिया और स्वयं नासिक चला गया। खुर्रम के विद्रोह के दमन में **महाबत खाँ** तथा **शहजादा परवेज** ने सम्राट की सहायता की थी।

(11) खुसरो की मृत्यु—खुसरो को खुर्रम के पास छोड़ दिया गया था। खुर्रम जब 1622 ई० में दक्षिण में गया तो खुसरो को भी बन्दी बनाकर अपने साथ ले गया था। खुर्रम ने खुसरो को मारने का एक षड्यन्त्र रचा। खुर्रम शिकार के बहाने बुरहानपुर की ओर चला गया। रात्रि में एक व्यक्ति ने खुसरो का दरवाजा खटकाते हुए कहा कि मुझको सुल्तान की आज्ञा हुई है कि तुमको कैद से मुक्त कर दूँ। खुसरो ने दरवाजा खोल दिया। इसी समय गला घोंटकर खुसरो का अन्त कर दिया गया। बुरहानपुर से लौटने पर खुर्रम ने सम्राट जहाँगीर को सूचित कर दिया कि पेट में वायु गोले की पीड़ा से खुसरो का देहान्त हो गया है।

(12) महाबत खाँ का विद्रोह—महाबत खाँ तथा शहजादा परवेज की सहायता से सम्राट ने खुर्रम के विद्रोह का दमन किया था। महाबत खाँ तथा परवेज की इस मित्रता को नूरजहाँ शंका की दृष्टि से देखती थी। इस दौरान महाबत खाँ की प्रतिष्ठा और शक्ति दोनों में ही पर्याप्त वृद्धि हो गई थी, जो नूरजहाँ को नागवार हुई। अत: उसने इन दोनों को अलग-अलग करने का षड्यन्त्र रचा। महाबत खाँ को बंगाल का सूबेदार नियुक्त कर दिया गया और शहजादा परवेज को खुर्रम के पास दक्षिण में भेजा गया। महाबत खाँ ने बंगाल जाने से संकोच किया। इस पर उसको दरबार में हाजिर होने का आदेश दिया गया। लेकिन महाबत खाँ के साथ दरबार में दुर्व्यवहार किया गया। इसी समय सम्राट जहाँगीर, नूरजहाँ तथा आसफ खाँ के साथ काबुल की ओर प्रस्थान कर रहे थे और उन्होंने **बेहत** नदी पर डेरा डाला था। अवसर की प्रतीक्षा में लगे महाबत खाँ ने विद्रोह कर दिया और सम्राट को कैद कर लिया। नूरजहाँ की सेना भी परास्त हो गई। आसफ खाँ भाग गया। नूरजहाँ चाहती तो वह भी नदी के दूसरे किनारे पर होने के कारण भाग सकती थी। लेकिन नूरजहाँ ने एक सच्ची प्रेमिका होने का परिचय देते हुए जहाँगीर के साथ बन्दी होना ही पसन्द किया। बाद में चालाकी से नूरजहाँ ने महाबत खाँ की सेना में विद्रोह करा दिया और जहाँगीर को मुक्त करा लिया। महाबत खाँ घबराकर दक्षिण की ओर भागा। वहाँ वह शहजादा खुर्रम को सम्राट बनाने का स्वप्न देखने लगा।

(13) जहाँगीर की मृत्यु—महाबत खाँ तथा खुर्रम के मिलन से नूरजहाँ को चिन्ता हो गई। इधर जहाँगीर का स्वास्थ्य भी गिरने लगा। अन्त में कश्मीर से लाहौर लौटते समय मार्ग में ही अक्टूबर 1627 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

नूरजहाँ का प्रभाव एवं चरित्र
(Influence of Nurjahan and his Character)

प्रश्न 2—नूरजहाँ कौन थी? उसके जहाँगीर के साथ वैवाहिक सम्बन्धों का विवेचनात्मक परीक्षण कीजिए। आपकी राय में शेर अफगन की हत्या में जहाँगीर का कहाँ तक हाथ था?

Who was Nurjahan? Critically examine the issue of her marriage with Jahangir and state how far was Jahangir responsible for the murder of Sher Afgan?

अथवा नूरजहाँ के जीवन काल की विशेष घटनाओं का उल्लेख कीजिए। समकालीन इतिहास को उसने किस प्रकार प्रभावित किया?

Review critically the main incidents of the life of Nurjahan. How did she influence the history of her times?

अथवा जहाँगीर के शासन काल की राजनीति पर नूरजहाँ का क्या प्रभाव पड़ा?

Trace the influence of Nurjahan upon the politics of Jahangir's reign.

अथवा जहाँगीर के शासन की कठिनाइयों के लिए नूरजहाँ के दायित्व की विवेचना कीजिए।

Explain the responsibility of Nurjahan for the problems of Jahangir's reign.

अथवा नूरजहाँ के चरित्र का वर्णन कीजिए।

Describe the character of Nurjahan.

उत्तर—

नूरजहाँ
(Nurjahan)

नूरजहाँ का परिचय—नूरजहाँ का मूल नाम **मेहरुन्निसा** था। उसका पिता **मिर्जा ग्यासबेग** फारस का निवासी था। आर्थिक संकट के कारण उसको अपना देश छोड़ देना पड़ा। वह कुछ व्यापारियों के साथ भारत की ओर बढ़ रहा था कि मार्ग में उसकी गर्भवती पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया। इस कन्या का नाम मेहरुन्निसा रखा गया। व्यापारियों के नेता ने ग्यासबेग का सम्राट अकबर से परिचय कराया और मिर्जा ग्यासबेग, उसकी पत्नी, उसका पुत्र आसफ खाँ तथा उसकी पुत्री मेहरुन्निसा अकबर के राजमहल में निवास करने लगे। ग्यासबेग का भाग्य-सितारा चमक उठा। वह चतुर, बुद्धिमान तथा लेखन-कार्यों में अत्यधिक निपुण था। अपनी योग्यता के कारण वह अकबर का कृपापात्र बन गया और तीन हजार के मनसब तक पहुँच गया। ग्यासबेग ने जहाँगीर से '**एतमादुद्दौला**' की भी उपाधि प्राप्त की।

अलीकुली खाँ या शेर अफगन से मेहरुन्निसा का विवाह—मेहरुन्निसा शाही महल में बड़ी होने लगी और शीघ्र ही वह अपने यौवन में पूर्ण हो गई। उसी समय मुगल दरबार में **अलीकुली खाँ** नामक व्यक्ति भी सेवारत था। अलीकुली खाँ भी फारस का निवासी था और मिर्जा ग्यासबेग की भाँति भाग्य की खोज में भारत आया था। **अब्दुर्रहीम खानखाना** के सम्पर्क में आकर वह अकबर तक पहुँचा और एक सैनिक के पद पर नियुक्त हो गया। शहजादा सलीम के साथ वह मेवाड़-विजय के लिए गया था। वहाँ उसने एक शेर को मारा था इसीलिए सलीम ने उसको '**शेर अफगन**' की उपाधि से विभूषित किया था। अकबर के निधन के उपरान्त जहाँगीर ने उसको बंगाल का सूबेदार बना दिया। इसी शेर अफगन के साथ मिर्जा ग्यासबेग ने अपनी सुन्दरतम एवं प्रतिभाशाली कन्या मेहरुन्निसा का विवाह कर दिया। शेर अफगन से मेहरुन्निसा के एक लड़की भी उत्पन्न हुई, जिसका नाम **लाड़ली बेगम** था।

शेर अफगन की मृत्यु—जहाँगीर के समय में बंगाल में विद्रोह हो रहे थे। शेर अफगन को भी विद्रोह का दोषी ठहराया गया और उसके विरुद्ध शाही सेना भेजी गई। सेना को आदेश दिया गया था कि शेर अफगन को जीवित बन्दी बनाकर जहाँगीर के सामने पेश किया जाए, किन्तु दुर्भाग्य से वह सैनिकों द्वारा मारा गया। मेहरुन्निसा अपनी लड़की लाड़ली बेगम के साथ

जहाँगीर के शाही महल में भेज दी गई और वह वहाँ पर राजमाता **सलीमा बेगम** की सेवा करने लगी।

मेहरुन्निसा का जहाँगीर से विवाह—शेर अफगन की मृत्यु 1607 ई० में हुई थी। 1607 ई० से 1611 ई० तक मेहरुन्निसा राजमाता सलीमा बेगम की सेवा में लगी रही। 1611 ई० में नौरोज के उत्सव के अवसर पर जहाँगीर ने मेहरुन्निसा को देखा और उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया। जहाँगीर ने एक बच्ची की माता और विधवा जिसकी आयु 34 वर्ष थी निकाह कर लिया। उसको **नूरमहल** की उपाधि दी गई और कालान्तर में उसको **नूरजहाँ** के नाम से पुकारा गया। वह मुगल-मलिका बन गई। इस प्रकार भाग्य चक्र ने उसे शाही परिवार की स्वामिनी बना दिया।

नूरजहाँ तथा जहाँगीर के विवाह के सम्बन्धों में इतिहासकारों के तर्क—डॉ० ईश्वरीप्रसाद के अनुसार, जहाँगीर शेर अफगन का वध कराने का दोषी था, क्योंकि वह मेहरुन्निसा से पहले से ही प्यार करता था। इसके विपरीत; **डॉ० बेनीप्रसाद** ने जहाँगीर को इस दोष से मुक्त किया है। नूरजहाँ तथा जहाँगीर के बीच विवाह सम्बन्धों की विवेचना इन्हीं दो विद्वानों के तर्कों के आधारों पर की जा सकती है—

(क) जहाँगीर शेर अफगन के वध का दोषी है—डॉ० ईश्वरीप्रसाद ने जहाँगीर को शेर अफगन के वध का दोषी पाया है और इस सम्बन्ध में निम्नलिखित तर्क दिए हैं—

(1) शेर अफगन के विरुद्ध विद्रोह का आरोप केवल सन्देह-मात्र था। उसके विद्रोही होने का ठोस प्रमाण नहीं था।

(2) मेहरुन्निसा को शेर अफगन की मृत्यु के बाद जहाँगीर के दरबार में भेजना और सलीमा बेगम की सेवा में रखना, यह सिद्ध करता है कि उस सेवा काल में जहाँगीर ने मेहरुन्निसा को निकाह के लिए तैयार किया होगा।

(3) जहाँगीर के संस्मरणों में इस घटना का कोई भी उल्लेख नहीं है।

(4) जहाँगीर को राजमहल में उपस्थित स्त्रियों पर आसक्त हो जाने की आदत थी, **अनारकली** का मकबरा इस बात का प्रमाण है।

(5) **डॉ० ईश्वरीप्रसाद** के अनुसार एक लेखक **डीलेट** का मत है—"जब मेहरुन्निसा कुमारी थी, तभी से वह युवराज सलीम के प्रेम पर विजय प्राप्त कर चुकी थी। जहाँगीर भी उसे अपने हृदय और मुगल साम्राज्य की मलिका बनाना चाहता था। लेकिन अकबर ने इसकी आज्ञा नहीं दी थी।"

(6) मेहरुन्निसा की आयु 34 वर्ष थी, जिस समय जहाँगीर ने उससे विवाह किया था। इस सम्बन्ध में **डॉ० ईश्वरीप्रसाद** का स्पष्ट मत है—"प्रेम का मूल्य आयु पर नहीं आँका जा सकता। इसका पथ निराला है और वह मन की भावनाओं तथा शरीर के गठन पर अवलम्बित है।"

(7) मेहरुन्निसा को उसके सम्पन्न भाई आसफ खाँ के पास न भेजकर, सलीमा बेगम की सेवा में नियुक्त करना भी जहाँगीर के मेहरुन्निसा के प्रति प्रेम को ही प्रकट करता है।

(ख) जहाँगीर शेर अफगन की हत्या का दोषी नहीं है—(1) **डॉ० बेनीप्रसाद** ने कहा है कि जहाँगीर ने शेर अफगन का वध नहीं कराया और न उसने नूरजहाँ से विवाह करने में किसी बल का प्रयोग किया। न ही पहले से जहाँगीर और नूरजहाँ में प्रेम था, क्योंकि इस सम्बन्ध में कोई भी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता।

(2) नूरजहाँ के विरोधी महाबत खाँ आदि ने भी इस घटना का कोई वर्णन नहीं किया कि जहाँगीर ने नूरजहाँ की प्राप्ति के लिए शेर अफगन का वध कराया था।

(3) यूरोपीय विद्वान **सर टामस रो** ने भी इस घटना का कोई वर्णन नहीं किया है। अन्य यूरोपीय लेखकों ने भी, जिन्होंने तत्कालीन दरबार के विभिन्न षड्यन्त्रों एवं घटनाओं का वर्णन किया है, जहाँगीर पर इस प्रकार का कोई आरोप नहीं लगाया है।

(4) जहाँगीर तथा शेर अफगन के सम्बन्ध मधुर थे। उसी ने अलीकुली खाँ को शेर अफगन की उपाधि दी थी।

(5) सलीम तथा मेहरुन्निसा का विवाह होने से पूर्व कोई परिचय नहीं था। यदि ऐसा होता तो शेर अफगन को सलीम इसमें पूर्व भी मरवा सकता था।

(6) यदि शेर अफगन के वध में जहाँगीर का तनिक भी हाथ होता, तो नूरजहाँ जैसे चरित्र की स्त्री अपने पति के हत्यारे जहाँगीर के प्रेम का सम्मान न करती।

(7) विद्रोह का दमन करना और विद्रोहियों को दण्ड देना एक सुल्तान का परम कर्तव्य है। इसलिए जहाँगीर द्वारा शेर अफगन का दमन करना किसी षड्यन्त्र का परिणाम नहीं हो सकता।

(8) कुछ विद्वानों ने मेहरुन्निसा को राजमहल में भेजने पर आपत्ति की है। किन्तु **डॉ० बेनीप्रसाद** का मत है—"राजमहल में मेहरुन्निसा के माता-पिता रहते थे। इसलिए मेहरुन्निसा का राजमहल में आना एक स्वाभाविक बात थी।"

(9) उस युग में सुल्तान किसी भी स्त्री पर मोहित हो जाते थे और उसे अपनी महारानी बनाने में कोई संकोच नहीं करते थे। ऐसी दशा में मेहरुन्निसा को देखकर जहाँगीर का उस पर मोहित हो जाना कोई नई बात नहीं थी। जहाँगीर ने मेहरुन्निसा को प्रथम बार 1611 ई० में नौरोज उत्सव पर **मीना-बाजार** में ही देखा था।

अन्त में **डॉ० बेनीप्रसाद** ने लिखा है कि जहाँगीर और नूरजहाँ के सम्बन्ध में प्रचलित कथाएँ मात्र रोमांचक कथाएँ हैं, जिनकी पुष्टि एतिहासिक तथ्यों से नहीं होती।

निष्कर्ष—संक्षेप हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जहाँगीर को हत्यारे के दोष से मुक्त किया जा सकता है क्योंकि जहाँगीर को दोषी ठहराने में जो तर्क दिए गए हैं, वे पूर्णतया सत्य नहीं हैं।

नूरजहाँ के जीवनकाल की मुख्य घटनाएँ
(Main Events of Nurjahan's Period)

नूरजहाँ मध्यकालीन युग की एक ऐसी नारी थी, जिसने मुगल सम्राट जहाँगीर को अपने रूप-लावण्य का दास बनाया और वर्षों तक उसे अपने संकेतों पर नचाया। उसके रूप की मदिरा में वह अपना होश खो बैठा था। जहाँगीर ने स्वयं कहा था—"मैंने शराब के एक प्याले और मांस की एक तश्तरी के लिए अपनी सल्तनत अपनी प्रेमिका को बेच दी है।" इस प्रभावशाली स्त्री ने सम्राट जहाँगीर के शासन काल को विशेष रूप से प्रभावित किया था। राज्य के राजनीतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण निर्णय भी नूरजहाँ लिया करती थी। उसके इस प्रभाव को दो विभिन्न कालों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) नूरजहाँ के प्रभाव का प्रथम काल तथा उसकी घटनाएँ (1611-1622 ई०)—नूरजहाँ के प्रथम काल की प्रमुख घटनाएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) नूरजहाँ सम्राट के नाम अथवा मुहर के स्थान पर अपने हस्ताक्षर करती थी।

(2) नूरजहाँ के पिता और भाई को उच्च पदों पर आसीन कर दिया गया था। इन दोनों ने उसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर अच्छी राय भी दी और उसकी महत्त्वाकांक्षाओं के ऊपर नियन्त्रण भी रखा।

(3) नूरजहाँ ने शहजादा **खुर्रम** को **शाहजहाँ** की उपाधि दिलवाई थी और उपने भाई आसफ खाँ की लड़की **मुमताज महल** का विवाह खुर्रम से कराया था, जो शाहजहाँ की प्रिय मलिका बनी थी, जिसकी याद में शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया था।

(4) इस युग में नूरजहाँ ने खुर्रम तथा आसफ खाँ ने मिलकर अपना एक गुट बनाया था।

(5) नूरजहाँ खुसरो को अपने मार्ग का काँटा समझती थी, इसलिए उसने खुसरो को खुर्रम को सौंप दिया और बाद में खुर्रम से उसे मरवा दिया।

(6) नूरजहाँ के प्रभाव से सेनापति महाबत खाँ खुश नहीं था। खुर्रम द्वारा खुसरो का वध कराए जाने पर महाबत खाँ, खुर्रम का जानी दुश्मन हो गया था।

(ख) नूरजहाँ के प्रभाव का द्वितीय काल और उसकी घटनाएँ (1622-1627 ई०)—नूरजहाँ के द्वितीय काल की प्रमुख घटनाएँ निम्न प्रकार हैं—

(1) आसफ खाँ की पुत्री मुमताजमहल का निकाह **खुर्रम** से और नूरजहाँ की पुत्री लाड़ली बेगम का निकाह शहजादा **शहरयार** से होने के कारण आसफ खाँ, खुर्रम तथा नूरजहाँ का गुट टूट गया।

(2) अब नूरजहाँ अपने दामाद शहरयार की ओर झुक गई थी। उसने सम्राट जहाँगीर पर जोर दिया कि वह शहरयार को अपना उत्तराधिकारी बनाए।

(3) इस युग में आसफ खाँ, नूरजहाँ से अलग हो गया। वह अपने दामाद खुर्रम को सम्राट का उत्तराधिकारी बनाने में लग गया था। इस सम्बन्ध में **लेनपूल** ने लिखा है, "जिस आसफ खाँ को नूरजहाँ ने सहायता दी थी, अब वह उससे घृणा करने लगा था"।

(4) दरबार में विभिन्न गुटों के कारण गृहयुद्ध का वातावरण उपस्थित हो गया था और फारस के शाह ने कन्धार पर आक्रमण कर दिया था।

(5) नूरजहाँ ने खुर्रम को कन्धार भेजकर शहरयार को उत्तराधिकारी बनाने का षड्यन्त्र रचा, जिसके कारण खुर्रम ने विद्रोह कर दिया, जो महाबत खाँ की सहायता से दबा दिया गया।

(6) खुर्रम के विद्रोह के बाद महाबत खाँ की शक्ति बढ़ गई और उसने शहजादा परवेज से मिलकर नूरजहाँ के विरुद्ध गुट बनाया और विद्रोह करके जहाँगीर तथा नूरजहाँ को कैद कर लिया।

(7) नूरजहाँ ने अपनी चालाकी से महाबत खाँ की सेना में फूट डाली और जहाँगीर को महाबत खाँ के चंगुल से छुड़ा लिया।

(8) इसी समय शहजादा परवेज की मृत्यु हो गई और खुर्रम तथा महाबत खाँ एक-दूसरे के विरोधी रहे। इन परिस्थितियों में नूरजहाँ को सफलता मिल गई।

(9) इन सब घटनाओं का जहाँगीर के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा और 1627 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

नूरजहाँ का अन्त—नूरजहाँ ने जहाँगीर की मृत्यु के तुरन्त बाद अपने दामाद शहरयार को लाहौर में सम्राट घोषित कर दिया। उसी समय आसफ खाँ ने भी अपने दामाद **खुर्रम** को जहाँगीर के मरने की सूचना दे दी और शीघ्र आगरा पहुँचने का निवेदन किया। आसफ खाँ ने शहरयार को समाप्त करने के उद्देश्य से लाहौर पर आक्रमण किया। शहरयार को बन्दी बना लिया गया। उसी समय खुर्रम दक्षिण से आ गया और आगरा के सिंहासन पर बैठ गया। उसने